पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
3	13वीं शती से 18वीं शती तक कला का इतिहास और मूल्यांकन	1

संक्षिप्त भूमिका

- **हिन्दू, जैन** तथा **बौद्ध** धर्म में **सचित्र पाण्डुलिपि** भारतीय कला के इस काल में समृद्ध हुई।
- **बंगाल, गुजरात** तथा **बिहार** इस सचित्र पाण्डुलिपि के प्रमुख केन्द्र थे।
- **बंगाल** तथा **बिहार** में ये पाण्डुलिपियां **पाल वंश** के शासकों के संरक्षण में तैयार हुई जिनमें **पाल शैली** स्पष्ट रूप में दिखाई देती है।
- **जैन धार्मिक पाण्डुलिपियाँ** गुजरात में लिखी एवं चित्रों द्वारा सजाई गई थीं। पाण्डुलिपियाँ पाम पात्र पर लिखी गई एवं सुन्दर चित्रों के लिए स्थान छोड़ा गया।
- इस काल में मन्दिर वास्तु कला का भी विकास हुआ। माउन्ट आबु के दिलवाड़ा संगमरमर के मन्दिर, बंगाल, उड़ीसा में पक्की मिट्टी के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।
- 16वीं शती ई॰ से 19 वीं शती ई॰ तक **राजपूत** तथा **मुगल** चित्रकारी काफी फली-फूली और समृद्ध हुई। **राजपूत चित्रकला** में **लोक चित्रकला** तथा **अजन्ता चित्रकला** शामिल थीं जबकि **मुगल चित्रकला** में **फारसी** तथा **राजपूत चित्रकला** का समन्वय था।

3.1

श्रृंगार

विवरण

शीर्षक : श्रृंगार

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : टैम्परा

शैली : गुलेर घराना

काल : 18 वीं शताब्दी

चित्रकला की विशेषतायें

- एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है।
- सामने एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है तथा एक अन्य नौकरानी दुल्हन के पैर में पायल पहना रही है।
- दो आकृतियां खड़ी हुई दिखाई गई हैं जिनमें से एक आईना लेकर खड़ी है और दूसरी फूलों की माला बना रही है।
- एक स्त्री किसी सहायिका के सहयोग से दुल्हन के बाल संवार रही है। एक वृद्ध महिला इस सारे क्रियाकलाप का निरीक्षण कर रही है।
- **श्रृंगार** एक विशिष्ट राजपूत चित्रकला है।

गुलेर पेन्टिग के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- कांगड़ा घाटी में **गुलेर** एक छोटा सा राज्य था यह राज्य पहाड़ी शैली के चित्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। 1450 ई॰ से 1780 के बीच यह शैली काफी समृद्ध हुई।
- **गुलेर लघु चित्रकला** पर **लोक कला** तथा **मुगल लघु चित्र शैली** का प्रभाव पड़ा।
- **गुलेर** चित्रों की विशेषता पौराणिक कृष्ण तथा राधा की प्रेम कथा है जो दिव्य प्रेम का जीवंत प्रतीक है।
- **गुलेर पेटिंग** में **रामायण** तथा **महाभारत** की कहानियों को दर्शाया गया है। इन कहानियों को शाही चित्रों तथा राज सभा के दृश्यों से सजाया गया है।
- संवेदनशील चेहरे, सौम्य व्यवहार तथा रंगों का कोमल मिश्रण **गुलेर शैली** की विशेषताएं हैं।

स्व-मूल्यांकन

3.1.1 **शृंगार** चित्र के अग्रभाग में स्त्री द्वारा किए गए क्रियाकलापों के बारे में बताइये।

3.1.2 **गुलेर चित्रकला** की मुख्य विशेषताओं के बारे में बताइये।

उत्तर

3.1.1 एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है।

3.1.2 **गुलेर** चित्र की मुख्य विशेषता कृष्ण और राधा की प्रेम कथा है। यह प्रेम कथा आज भी दिव्य प्रेम के जीवंत प्रतीक के रूप में मानी जाती है।

3.2

जैन लघुचित्र
(कल्पसूत्र)

विवरण

शीर्षक : कल्पसूत्र
कलाकार : अज्ञात
माध्यम : पाम की पत्तियों पर टैम्परा
शैली : जैन पाण्डुलिपि चित्र
काल : 15वीं शताब्दी ईस्वी

चित्रकला की विशेषतायें

- **कल्पसूत्र** सूचीबद्ध चित्र जैन धर्म की पुस्तक **''कल्पसूत्र''** में एक चित्र है।
- इस चित्र के संयोजन में समस्त स्थान को कुछ आयतों, चौकोरों में बाँटा दिया गया है। पुरूष, स्त्रियों तथा पशुओं का चित्रण लाल रंग की पृष्ठभूमि में दिखाया गया है।
- प्रत्येक खण्ड में **कल्पसूत्र** की कहानी का अलग-अलग कथाक्रम वर्णित है।
- यह शैली पूरी तरह लोक शैली पर केन्द्रित है जहां आकार में चपटापन है तथा अभिव्यक्ति रूढ़िवादी है जिसमें परिदृश्य का अभाव है।
- प्रवाहपूर्ण रेखाओं और सौंदर्यपरक बिंदुओं के प्रयोग से इस चित्र की सुंदरता को बढ़ाया गया है।

जैन लघुचित्र के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- पूरे भारत में **सातवीं शती** से प्रारम्भ होकर **10वीं** तथा **15वीं** शती तक **जैन लघु चित्रों** का विकास हुआ।
- **जैन धर्म ग्रंथ** जैसे कि **"कालकाचार्य कथा"** तथा **कल्पसूत्र** को **पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, ऋषभनाथ** तथा अन्य तीर्थंकर के चित्रों से सजाया गया है।
- इन चित्रों के मुख्य केन्द्र **पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात** तथा **राजस्थान** थे।
- इन चित्रों में मानवी आकृतियां कुछ विशिष्टताओं को दर्शाती हैं।
- ये पाण्डुलिपियां प्रमुख रूप से **पामपत्रों** पर लिखी गई हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग जैसे लाल तथा पीला आस-पास में उपलब्ध रगों से ही बनाए जाते थे।

स्व-मूल्यांकन

3.2.1 **'कल्पसूत्र'** चित्रकृति संयोजन में, स्थान को कैसे बाँटा गया है।

3.2.2 **जैन पाण्डुलिपियों** में किस प्रकार की आकृतियों को बनाया गया है, बताइये।

3.2.3 **जैन लघु चित्रकला** किस काल में विकसित हुई?

उत्तर

3.2.1 स्थान को चौकौर और आयताकार में बाँटा गया है।

3.2.2 **पार्श्वनाथ, नेमिनाथ** तथा **ऋषभनाथ** के चित्रों द्वारा सजाया गया है।

3.2.3 **7वीं शताब्दी** से **15वीं शताब्दी ई०**।

3.3

विष्णुपुर टैराकोटा

विवरण

शीर्षक : विष्णुपुर टैराकोटा - रासलीला

माध्यम : टैराकोटा की टाइल्स

स्थान : पश्चिम बंगाल के विष्णुपुर में पंचमुरा मन्दिर

काल : 17वीं शती के आस-पास

टेराकोटा की विशेषतायें

- **रासलीला** में राधा कृष्ण के दिव्य प्रेम को उनके साथी ग्वालों तथा गोपियों के सानिध्य में दिखाया गया है।
- इस सुन्दर फलक को एक चौकोर स्थान पर तीन गोलों को केन्द्रित कर संयोजन किया गया है। इन तीन गोलों में से बीच के गोले में एक गोपी के साथ राधा कृष्ण की आकृतियां दिखाई गई हैं।
- कलाकार ने समकालीन सामाजिक जीवन को दर्शाने का पूर्ण प्रयास किया है। चौकोर के चारों कोनो को **मानव, पशुओं** तथा **चिड़ियाओं** की आकृतियों से सजाया गया है।

टेराकोटा के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- पश्चिम बंगाल में **विष्णुपुर** एक छोटा सा शहर है।
- यहां कई मन्दिर हैं जिनको पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स से सजाया गया है।
- यह **टेराकोटा कला 18 वीं** तथा **19 वीं शती** की विभिन्न संस्कृतियों तथा धार्मिक घरानों को प्रतिबिंबित करती हैं।
- अधिकांश मन्दिर या तो **शिवजी** या **विष्णुजी** को समर्पित हैं।
- **शिव, दुर्गा** तथा **राधा कृष्ण** की आकृतियां **रामायण** तथा **महाभारत** के पात्रों के साथ इन टेराकोटा टाइल्स में दर्शाई गई हैं।
- मन्दिर वास्तुकला बंगाल की झोपड़ी प्रकार की एक मंजिली या दो मंजिली डिजाइन पर आधारित है।

स्व-मूल्यांकन

3.3.1 **रासलीला** पैनल में गोलाकारों की संख्या स्पष्ट कीजिए।

3.3.2 **रासलीला** पैनल चतुर्भुज के चारों कोनो को कैसे सजाया गया है।

3.3.3 **विष्णुपुर टैराकोटा** टाइल्स में किन आकृतियों और पात्रों को दिखाया गया है, बताइये।

उत्तर

3.3.1 तीन गोलाकार आकृतियों में।

3.3.2 चारों कोनों को **मानव आकृति, पशुआकृति** और **पक्षियों** से सजाया गया है।

3.3.3 **शिव, दुर्गा, राधा-कृष्ण,** एवं **रामायण** तथा **महाभारत** के विभिन्न चरित्र।

क्या आप जानते हैं?

- **13वीं शती** से **18वीं शती** के बीच शक्तिशाली वंशों के पतन के बाद कला के संरक्षकों का अभाव हो गया। परन्तु इस काल में विभिन्न भारतीय धर्म-सम्प्रदायों से सम्बन्धित जैसे हिन्दू, जैन, बौद्ध धर्म आदि की सचित्र हस्तलिपियाँ तथा पाण्डुलिपियाँ काफी संख्या में तैयार हुई जिससे भारतीय कला समृद्ध हुई।
- इस काल में भारत के कुछ भागों में मन्दिर वास्तुकला विकसित हुई जैसे **माउण्टआबु** में दिलवाड़ा के संगमरमर के मन्दिर समूह तथा **बंगाल** और **उड़ीसा** पक्की मिट्टी (टैराकोटा) के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।
- **गुलेर लघुचित्र कला** विकास के विभिन्न चरणों को पार करती हुई विकसित हुई। इस पर **लोककला** तथा **मुगल लघु चित्रशैली** का प्रभाव पड़ा। यह लघुचित्र आकार में छोटे थे पर इनमें सौन्दर्य और तकनीकी गुण काफी उच्च कोटि के थे।